सत्य साहित्य

वर्ष 2 / अंक 3
अप्रैल 2019
Year 2/ No. 3
April
2019

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

सर्व शक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः

धर्मराय जब लेखा माँगे, क्या मुख लेके जाएगा ।
नाम सुमिर (नाम सिमर नाम सिमर) पछताएगा । धर्मराय---

पापी जियरा लोभ करत है, आज काल उठि जाएगा ॥

(1) लालच लागी जन्म गँवाया, माया भरम भुलाएगा
धन जौबन का गर्व ना कीजै, कागद ज्यों गलि जाएगा ॥

(बस चलना)
(2) जब जम आय केस गहि पटकै, ता दिन कछु न बसाएगा
सुमिरन भजन दया नहिं कीन्ही, तो मुख चोटा खाएगा ॥

(3) धर्मराय जब लेखा माँगे, क्या मुख लैके जाएगा
कहत कबीर सुनो भाई साधो, साध संग तर जाएगा ॥
नाम सुमिर पछताएगा ।

तू रम जा श्री राम, मन में, तू रम जा ।

(परम पूजनीय महाराज जी की डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- Characteristics of Dharma
- करने वाला परमेश्वर ही है
- जीवन में धर्म
- अवतरण दिवस की बधाई
- अनुभूतियाँ
- विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
- कैलेंडर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य
मूल्य (Price) ₹5

Characteristics of Dharma

सत्यानन्द

Without fortitude we cannot observe dharma. It is the core tenet and symptom of Dharma and should be cultivated with tenacity.

Religious sect, dogma, belief etc. are merely words. Dogmas or beliefs mean a school of thought. They are all subject to change according to time and preceptor. But Dharma never changes. It is inseparably associated with our lives. So we ought to cultivate Dharma. The ten characteristics of dharma are as follows :

***Dhairya* (Patience):** means to be very determined and resolute in ones thoughts and deeds. There have been men who are renowned in history for their resolve. Without fortitude we cannot observe dharma. It is the core tenet and characteristic of Dharma and should be cultivated with tenacity. Just like the devotee Prahlada, Mira, Dhruva, Shri Ram Chandra Ji Maharaj, King Harishchandra, Bal Haqiqat Rai etc. did.

***Kshama* (Forgiveness) :** Kshama means contentment and forbearance. It is also a necessity in every sphere of life. If someone says something provocative against us, we should not become angry.

***Daman* (Control over mind) :** To keep the mind completely under control or, in a manner of speaking, to tame the mind. It is somewhat difficult to tame the mind because it is not a tangible object like a river or anything else i.e. it is unique. People channelise rivers and make it flow on a specific path or in a specific direction. It is also claimed that the rivers of England have been more channelised as compared to the rivers of India. Something to also think about is the fact that while air can be made to flow in a particular direction, neither is it possible to completely restrain it nor is it a requirement.

The three principal means of controlling the mind are -

1. Always be doing some work or the other.
2. The time for all daily tasks should be fixed.
3. Regarding your mind, know for certain it is yours and have the conviction that

it is subordinate to you and will function according to your will.

i. If one is busy with work, he will never have random thoughts. An idle boy will no doubt get up to some mischief or the other. So someone has said - busy yourself in your idle time, if nothing else tear up cloth and sew it up again.

It includes purity of mind, external purity, purity of speech and intellectual purity. This is extremely essential. In ancient times and even now it is still observed.

ii. One who keeps to a routine, his mind gets habituated to it. He will feel hungry at the proper time and also feel sleepy at the proper time. This will make it unnecessary to subjugate the mind by forceful means.

iii. Just like while issuing an order a Commander-in-Chief is confident that his order will be obeyed, in the same way you should also have the confidence that I am the Sheriff of my mind i.e. I have authority over it.

***Chori* (Setting your sights on another's belonging) :** The fourth characteristic of dharma is that neither should we try to take ownership of an object belonging to another nor even entertain the idea. However, during wars and other calamities it is an altogether different thing. If our army routs the invading enemy troops and seizes their guns, canons, bombs and ammunition then, under the circumstances, it cannot be deemed as stealing. There is no intent to steal here.

***Shouch* (Purity):** It includes purity of mind, external purity, purity of speech and intellectual purity. This is extremely essential. In ancient times and even now it is still observed. If an animal enters a zamindar's fields, he will immediately drive it out and not first go to the police station to lodge a report.

***Indriya-Nigraha* :** Control of sensory organs or taming the sense organs.

***Buddhi* (Intellect) :** A discriminating or moral intellect.

***Vidya* (Knowledge) :** Of two types - Para (sacred) and Apara (secular).

***Satya* (Truthfulness) :** *"Tyage Asatya Hari-Anuragi, Kar Hari-Pujan Ban Barbhagi |"*

(The God-devotee falsehood consigns, worshipping God his fortune shines)

***Akrodha* (Absence of anger) :** Anger is very harmful. But if a mother scolds her child for not going to school, that cannot be deemed as anger.

Sadhana-Satsang Hoshiarpur
Date : 24 to 27.12.1947
Time : Afternoon 3 o'clock

प्रवचन पीयूष, धर्म के लक्षण पृ. 376–378

Footnote :-
Dharma. : There is no single word which can be substituted for the Sanskrit word 'Dharma'. Dharma is the path of righteousness and living one's life according to the codes of conduct as prescribed by the scriptures. The purpose of Dharma is not only to attain a union of the soul with the Supreme Soul, it also suggests a code of conduct that is intended to secure both worldly joys and supreme happiness. ■

करने वाला परमेश्वर ही है

प्रेम

हम सब जानते हैं कि आत्मा अमर है, अविनाशी है परन्तु फिर भी स्वामी जी महाराज की फुलवारी की पत्तियाँ झड़ती हैं तो दुःख होता है। स्वामी जी महाराज के सम्पर्क में आना अहोभाग्य है, हम जो उनके सम्पर्क में आए यह उनकी अपार कृपा है। जो यहाँ से चले गए, राम धाम में हैं। मैं फिर भी प्रार्थना करुँगा कि वह कहीं भी रहें, हमेशा तेरा ही काम करते रहें, तेरी ही सेवा करते रहें। साधना करने वाले के रास्ते में कई रुकावटें आया करती हैं। अहंकार विशेष है, थोड़ी सी कमाई करके परमेश्वर की कृपा हो जाती है, अहं आ जाता है कि मुझ में शक्ति आ गई है। मेरी कोई मन की बात न करे तो क्रोध भी आ जाता है, इसने मेरी बदनामी क्यों करी। अहं साधना के रास्ते में बड़ा भारी विघ्न है। सहन करें, यत्न करें कि अपने आपको परमेश्वर के हवाले कर दें। यह जो कृपा दी होती है जब चाहें वापिस भी ली जा सकती है। कुछ लोग अपने आपको बड़ा मानते हैं, दूसरों को तुच्छ समझते हैं। एक बार महाराष्ट्र में अकाल पड़ा। शिवाजी ने किला बनवाना शुरु कर दिया यह सोच कर कि कई लोगों को नौकरी मिल जाएगी। समर्थ रामदास जी उधर से गुजरे। शिवाजी ने आगे जाकर यह बात कही। समर्थ रामदास जी ने शिवाजी को मिट्टी उठाने को कहा। मिट्टी में से मेंढक का बच्चा निकला। तो शिवाजी ने पूछा, "उसको रोटी कौन देता है?" समर्थ रामदास जी ने कहा, "करने वाला कोई और ही है यह धारणा धारणी चाहिए कि करने वाला दाता है, करने वाला परमेश्वर ही है।" यदि उसकी करनी न होती तो हम महाराज जी के सम्पर्क में न आते। महाराज जी ने सारी उम्र सेवा करी अपने आपको बड़ा नहीं कहलवाया अपनी पूजा नहीं करवाई। बड़ा वही है जो बड़ा सेवक है। जो अपने आपको बड़ा समझते हैं वह राम ही जानते हैं कि वह कितना बड़ा है। यहाँ पर जो भी कोई आए हैं जितना समय सेवा में लगा सकें लगाएँ तथा अहं न आने दें। परमेश्वर श्री राम तेरी कृपा सब पर हो। तेरी कृपा सब पर हो। परमार्थ का जीवन तेरी कृपा से ही मिलता है। तू ही कृपा कर।

(परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के प्रवचन, साधना सत्संग हरिद्वार 24-25.7.1969)

जीवन में धर्म

विश्वामित्र

धर्म केवल एक है और वह है जो जीव में पुनः ईश्वर की ओर ले जाना चाहता है।

~

अपने जीवन में जो निष्पक्षता का सामर्थ्य है, वही धर्म है।
आँख कुमार्ग में न जाये,
हाथ कुकर्म न करें, पाँव बुरे स्थान में न जायें, जीभ वह न बोले जो नहीं बोलना चाहिये

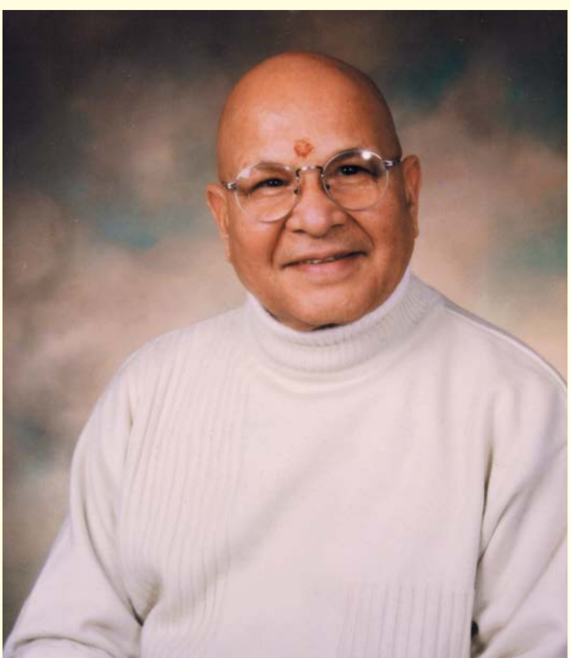

स्वामी जी महाराज धर्म के दस लक्षण वर्णन कर रहे हैं, इन लक्षणों की रचना मनु जी महाराज ने की थी, तब से किसी भी लक्षण में कोई भी परिवर्तन नहीं किया गया, न ही किए जाने की कोई गुंजाईश है। स्वामी जी महाराज ने इसे मानव धर्म कहा है। मनु जी महाराज ने भी मानव धर्म ही कहा होगा। कल प्रेम पर चर्चा की जा रही थी। स्वामी जी महाराज हम जिज्ञासुओं को यही समझाते हैं कि परमेश्वर की भक्ति और प्रीति उपार्जन करना तथा उनके भक्तों से, उनके पुत्रों से, प्यार का बरताव करना ही धर्म का सार है। कितनी सुन्दर बात स्वामी जी महाराज ने फरमाई है। प्रेम पथ के अन्तर्गत, जिस किसी भी भाग्यवान के हृदय में प्रेम उत्पन्न हो जाता है, भगवत्प्रेम पैदा हो जाता है, उसकी नित्य वृद्धि होती रहती

है। समझ लीजिए उसका जीवन कृतकृत्य हो गया। प्रेम बड़ी गहरी चीज़ है, बात तो धर्म की करनी है लेकिन स्वामी जी महाराज फरमाते हैं कि धर्म का सारा सार है प्रेम। प्रेम में शरीर की आवश्यकता नहीं होती। बड़ी गहरी चीज़ है यह प्रेम। दावा तो हर कोई करता है कि हम प्रेम करते हैं। हमारे अन्दर परमात्मा के प्रति प्रेम है, हमारे अन्दर सबके प्रति प्रेम है, लेकिन बिना समझे प्रेम कैसे ? जहाँ शरीर की आवश्यकता होती है दो शरीरों का मिलन होता है उसे वासना कहा जाता है। मेहरबानी करके इन शब्दों पर थोड़ा ध्यान दें। युवक लोग आए हुए हैं, जहाँ दो शरीरों का मिलन हुआ करता है, उसे वासना कहा जाता है। जहाँ दो मन मिलते हैं उसे प्रेम कहा जाता है। जहाँ दो आत्माओं का मिलन होता है उसे भक्ति कहा जाता है। भेद याद रखिएगा। प्रेम में व्यक्ति के पीछे–पीछे घूमने की आवश्यकता नहीं पड़ती। प्रियतम के पीछे–पीछे घूमने की, भटकने की आवश्यकता नहीं पड़ती। यह मन का मिलन है, इसमें शरीर की आवश्यकता नहीं हुआ करती। जहाँ शरीर की आवश्यकता महसूस हो, तो समझ लें किसी न किसी अंश में वासना भीतर घर किए हुए है। प्रेम में कोई माँग नहीं होती। There is no condition in प्रेम। आप गोरे हैं, काले हैं, अमीर हैं, गरीब हैं इन सब चीज़ों को देख कर प्रेम नहीं हुआ करता। गुणरहितम्, किसी condition से प्रेम नहीं होता। यदि किसी condition से प्रेम होता हो तो जब वह condition नहीं रहेगी तो प्रेम खत्म हो जाएगा तो कैसा प्रेम है जो खत्म हो गया?

स्वामी जी महाराज हम जिज्ञासुओं को यही समझाते हैं कि परमेश्वर की भक्ति और प्रीति उपार्जन करना तथा उनके भक्तों से, उनके पुत्रों से, प्यार का बरताव करना ही धर्म का सार है।

प्रेम का उदय तो होता है पर अस्त नहीं होता। प्रेम में अमावस नहीं आती। प्रति क्षण वर्द्धनम् है हर क्षण बढ़ता रहता है यह। संत महात्मा तो प्रेम के पुजारी को यहाँ तक कहते हैं कि प्रेम में पूर्णमासी भी नहीं आती। पूर्णमासी होगी तो प्रकाश चरम सीमा पर है लेकिन प्रेम की चरम सीमा तो है नहीं। यह तो प्रति क्षण वर्द्धनम् है, न इसमें पूर्णिमा है, न ही इसमें अमावस। कैसी विलक्षण चीज़ है ये प्रेम। ऐसा solvent ऐसा घुलनशील पदार्थ प्रेम जिसमें सब कुछ घुल जाता है। प्रेमी भक्त के अन्दर किसी प्रकार का विकार नहीं रह सकता। अभिमान जिसे इतना insolvent माना जाता है प्रेम में ऐसी सक्षमता है कि वह इसे भी घोल कर रख देता है। स्वामी जी महाराज ने फरमाया है कि प्रीति उपार्जन करना ही धर्म का सारा सार है।

अहिल्या रानी, इन्दौर की महारानी (गौतम की पत्नी नहीं) ने, गीता जी के ऊपर प्रवचन का आयोजन किया हुआ था। वक्ता ने जैसे ही पाठ शुरु किया ''धर्म क्षेत्रे कुरु क्षेत्रे'' तो महारानी अहिल्या ने घंटी बजा दी,'' बस। गीता का इतना उपदेश पर्याप्त।'' यदि इस श्लोक का ये चुतर्थांश जो बोला गया है 'धर्म क्षेत्रे कुरु क्षेत्रे' अपने जीवन में उतरता है तो यह पर्याप्त। संत महात्मा महापुरुष इत्यादि वहाँ बैठे थे, कहा महारानी हमें बात समझ में नहीं आई। रानी अहिल्या ने कहा,''गीताचार्य यही कह रहे हैं, क्षेत्रे क्षेत्रे धर्म कुरु''। गीता जी का श्लोक तो कहता है, ''धर्म क्षेत्रे कुरु क्षेत्रे''। अहिल्या ने इन्हीं चार शब्दों को बदल दिया,''क्षेत्रे क्षेत्रे धर्म कुरु''। जिस क्षेत्र में भी हैं, आप यदि प्रत्येक कर्म के साथ धर्म को जोड़ कर रखते हैं तो यह गीता जी का सारा सार है। इसके बिना कर्म दूषित हो जाएगा। बन्धनों का कारण हो जाएगा। आप अनासक्त जीवन व्यतीत नहीं कर सकोगे।

एक महात्मा हैं, उच्च कोटि के महात्मा। आज रात स्वप्न हुआ है। उनके पास धरती से लेकर आकाश तक ऊँचे दो डण्डे हैं। इन दोनों डंडों के

पृष्ठ 10 पर जारी

अवतरण दि

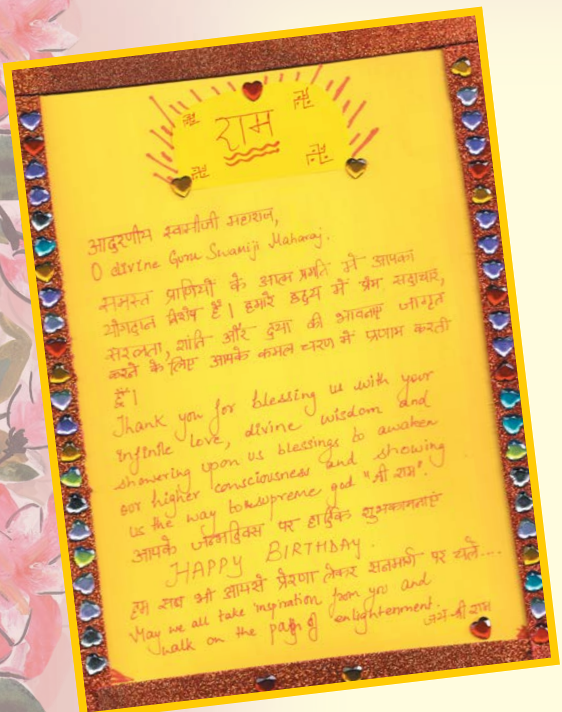

चैत्र पूर्णिमा 1868 (19 अप्रैल)

भ्रम भूल में भटकते,
मिला अचानक गुरु मुझे,

Loving Jai J
you. Happy Swami Ji
Ram swami Sr happ
CONGRATUL

स की बधाई

15 मार्च, 1940

उदय हुए जब भाग।
लगी लगन की जाग।।

भक्ति प्रकाश, 3 पृ- 51

...ai Ram to all of
... Birthday happy
...py Baisakhi.
...ATIONS.

पृष्ठ 7 से आगे...

माध्यम से वह मोक्ष महल की छत पर जाना चाह रहे हैं। कल्पना करो दो उनके पास pillars जैसे बने हुए हैं यहाँ से आकाश तक और ये महात्मा चढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। वे दोनों डंडों के माध्यम से अकेले–अकेले उन पर चढ़ कर छत पर चढ़ने की कोशिश कर रहे हैं परन्तु बार–बार गिर रहे हैं। कभी थोड़ा ऊपर तो कभी ज्यादा ऊपर लेकिन बार–बार गिरते जाते हैं। स्वप्न देख रहे हैं। अपने को हताश निराश महसूस कर रहे हैं। परमेश्वर की ऐसी करनी देखिएगा, स्वप्न में एक वृद्ध दिखाई देते हैं जो मुस्कुरा रहे हैं। महात्मा को लगा जैसे उनसे गलत हो रहा है और उनकी मूर्खता को देख कर ये वृद्ध हंस रहे हैं। वृद्ध ने पूछा,''महात्मा जी ! क्या कर रहे हैं आप?'' महात्मा ने कहा, ''इन डंडों के माध्यम से मैं मोक्ष महल की छत पर जाना चाहता हूँ। परन्तु असफल हो रहा हूँ। अतः निराश हूँ। आपको कुछ पता हो और आप मेरा पथ प्रदर्शन कर सकते हैं तो कीजिएगा। मेरी सहायता कीजिएगा। चूंकि आप मुस्कुरा रहे हैं तो मुझे लगता है कि कुछ मुझसे गलत हो रहा है, जिसके कारण मैं चढ़ नहीं पा रहा और आप को मेरी गलती पता है। मेहरबानी करके बताएँ कि वह क्या गलती है।'' वृद्ध ने कहा, ''महात्मा जी ! हैं तो आप बहुत समझदार, आपके पास ज्ञान के, भक्ति के, कर्म के, दर्शन के philosphy के इत्यादि इत्यादि ऊँचे ऊँचे दो डंडे हैं। लेकिन इन दोनों डंडों को जोड़ने वाले बीच के डंडे जो होते हैं जिससे सीढ़ी बनती है वह आपके पास नहीं है। वह धर्माचरण के डंडे। वह नहीं होंगे तो किस पर पाँव रख कर चढ़ोगे? चढ़ने के लिए कोई अवलम्बन चाहिए, कोई सहारा चाहिए। आप बेसहारा हैं। धर्म कितना महत्वपूर्ण है हमारी जिन्दगी में, साधक की जिन्दगी में ही नहीं, हर एक की जिन्दगी में। अधर्माचरण किसी को शान्ति प्रदान नहीं करने देता। धर्माचरण आता है तो जीवन सदाचारी होता है, संयमी होता है, अनुशासित होता है। नियमित जीवन होता है तो शान्ति की प्राप्ति होती है। धर्म का पालन हर साधक के लिए आवश्यक है।

धर्म कितना महत्वपूर्ण है हमारी जिन्दगी में, साधक की जिन्दगी में ही नहीं, हर एक की जिन्दगी में। अधर्माचरण किसी को शान्ति प्रदान नहीं करने देता। धर्माचरण आता है तो जीवन सदाचारी होता है, संयमी होता है, अनुशासित होता है। नियमित जीवन होता है तो शान्ति की प्राप्ति होती है। धर्म का पालन हर साधक के लिए आवश्यक है।

किसी एक महात्मा ने किसी से पूछा, ''क्या आपने धर्म ग्रन्थों का कभी अध्ययन किया है?'' व्यक्ति ने कहा ''नहीं।'' महाराज ने पूछा,''फिर कैसे जीवन व्यतीत करोगे?'' व्यक्ति कहता है,''महाराज ! मैंने धर्म ग्रन्थों का अध्ययन नहीं किया हुआ, मैंने धर्म का अध्ययन किया हुआ है।'' किस चीज की आवश्यकता है? धर्म का अध्ययन करने की आवश्यकता अर्थात जो आज आपने दस लक्षण पढ़े हैं उन्हें जीवन में उतारना ही धर्म का सार है। यदि वे लक्षण जीवन में नहीं उतरते तो आप जन्म–जन्म धर्म ग्रन्थ पढ़ते रहें, क्या होने वाला है इससे? कुछ नहीं। जितने लक्षण पढ़ें, उन्हें अपने जीवन में उतारिएगा तो आप धार्मिक हैं, अध्यात्मिक हैं, अथवा इनके बिना शून्य। यदि ये जीवन में नहीं आते तो हम एक पग भी प्रगति नहीं कर पाएँगे। Jump करके आगे जाते ही यदि धर्माचरण नहीं तो कोई कुकर्म हो जाता है। बेईमानी, अपवित्र कर्म, कुकर्म हो जाता है जो झट से पीछे पछाड़ता है और आप फिर से धरती पर आ कर गिर जाते हैं।

(भक्ति प्रकाश, धर्म के दस लक्षण पृ 212–215 के पाठ के बाद परम पूजनीय महाराज के प्रवचन 5.1.2009) ■

गुरु कृपा का अद्भुत चमत्कार

12 अगस्त 2018, रविवार, मैं अपने पति के साथ श्रीरामशरणम् से वापिस घर जा रही थी। मेरा घर वहाँ से लगभग 8–9 किलोमीटर दूर है। हम घर पहुँचने वाले थे कि हमारे बाईक (Bike) के आगे कुत्ता आ गया और कुत्ते को बचाते हुए ऐसी दुर्घटना हो गई कि मेरे पति unconscious हो गए और एक दम से लहुलुहान हो गए। मुझे भी चोट लगी, परन्तु मैं होश में थी। जब तक मैं घर inform करती, एक गाड़ी मेरे पास आ कर रुकी। गाड़ी वाले ने कहा जल्दी से इन्हें हस्पताल पहुँचाते हैं। परन्तु बचने की उम्मीद न देखते हुए मैं उन्हें घर लेकर जाना चाह रही थी। गाड़ी वाले ने फिर कहा,''कोशिश करके देख लेते हैं।'' तेज़ी से हम हस्पताल पहुँच गए। सभी ना उम्मीद थे, परन्तु तब तक न जाने कहाँ से एक उम्मीद जग गई। मैंने कैसे भी करके emergency से ही श्रीरामशरणम् से contact किया। इनके लिए जाप के रुप में प्रार्थना शुरु हो गई। इन्हें unconscious ही लुधियाना के एक बड़े हस्पताल में पहुँचा दिया गया।

राम कृपा से, गुरु कृपा से और सामूहिक जाप से ICU में श्री महाराज जी आए और मेरे सिर पर हाथ रखा। मेरा विश्वास अटल हो गया। मेरे मुख से केवल यही शब्द निकले,''स्वामी जी आशीर्वाद दो, प्रेम जी महाराज वैद्य बन कर आ जाओ और महाराज जी दया बरसाओ। कृपा करो।'' राम का अद्भुत चमत्कार। जैसे–जैसे जाप हो रहा था वैसे–वैसे मेरे पति भी improve हो रहे थे। डॉक्टर हैरान थे। मैं भी माला छोड़ नहीं रही थी। अन्त में जब उनकी recovery देखी तो डॉक्टर के मुख से भी निकल गया,''ये माला का ही कमाल है''।

परन्तु केवल मैं ही जानती हूँ कि यह चमत्कार श्री महाराज जी की कृपा और राम कृपा के बिना सम्भव नहीं। उन्हीं दिनों सितम्बर में हमारे यहाँ साधना–सत्संग भी था। मेरा विश्वास था कि महाराज जी आएँगे और असम्भव को सम्भव करके दिखलाएँगे। हुआ भी वैसे ही। तीन दिन बाद ही मेरे पति ने मेरे साथ बोल–बोल कर श्री अमृतवाणी जी का पाठ किया। यह चमत्कार से कम नहीं है। अब मेरे पति राम कृपा से गुरु कृपा से काफी ठीक हैं।

संशय रहित विश्वास

मैं दिल्ली में रहती हूँ। घर से चलती हूँ,''गुरु जी मैं जा रही हूँ आज्ञा दीजिए।'' फिर श्री रामशरणम् पहुँच कर देखती हूँ कि पूजनीय महाराज जी बाहर खड़े हैं। मुस्करा कर पूछते हैं'' आप आ गए।'' इतना कह कर हॉल में चले जाते हैं। मैं विस्मित हो कर अपने स्थान पर बैठ जाती हूँ, और मन ही मन उनकी कृपा को अनुभव करती हूँ। गुरुदेव कृपा अवश्य करते हैं। आवश्यकता है संशय रहित विश्वास, आस्था, प्रेम एवं श्रद्धा की। गुरु जी के चरणों में मेरा कोटि कोटि प्रणाम, कोटि कोटि धन्यवाद।

'गुरु जी की कृपा सब पर भारी।
जो समझे वह अधिकारी।'

गुरु कृपा से ही मनुष्य शान्ति एवं पूर्णता को प्राप्त कर सकता है। ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

दिसम्बर 2018 से मार्च 2019

साधना सत्संग, खुले सत्संग, उद्घाटन एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **दाहोद,** गुजरात में 16 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 1782 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **पेटलावाद,** मध्य प्रदेश में 17 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 1816 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बोलासा,** मध्य प्रदेश में 18 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 2691 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **कल्याणपुरा,** मध्य प्रदेश में 19 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 7125 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **कुशलगढ़,** राजस्थान में 20 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 2096 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **देवास,** मध्य प्रदेश में 25 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 131 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **होशियारपुर,** पंजाब में 30 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 40 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सुजानपुर,** पंजाब में 29 से 30 दिसम्बर तक खुला सत्संग लगा जिसमें अन्य स्थानों से 530 साधक सम्मिलित हुए और 179 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **इन्दौर,** मध्यप्रदेश में 4 से 7 जनवरी तक साधना सत्संग लगा जिसमें 6 जनवरी को 246 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। यहाँ 6 जनवरी को खुली बैठक में 1500 से अधिक साधकों ने सत्संग का लाभ लिया।
- **संगवाड़ा डुँगरपुर,** राजस्थान में 11 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 3861 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सातसेरा,** मध्य प्रदेश में 12 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 3736 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बीकानेर,** राजस्थान में 19 से 20 जनवरी को खुला सत्संग लगा उसमें 71 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **मुम्बई,** महाराष्ट्र में 19 से 20 जनवरी को श्री वाल्मीकीय रामायणसार का अखण्ड पाठ हुआ जिसमें 231 साधकों ने श्री रामशरणम् परिसर के अन्दर रह कर आनन्द उठाया। 20 जनवरी को 93 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। मुम्बई में ही नहीं, महाराष्ट्र भर में ऐसा पहला आयोजन हुआ।
- **फरीदाबाद,** हरियाणा में 26 जनवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 106 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हांसी,** हरियाणा में 1 से 4 फरवरी तक साधना सत्संग लगा जिसमें 3 फरवरी को 131 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **पीलीबंगा,** राजस्थान में 9 से 10 फरवरी को खुला सत्संग लगा उसमें 79 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **जंडियाला गुरु,** पंजाब में 10 फरवरी को एक दिवसीय खुला सत्संग लगा उसमें 70 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

- **रोहतक,** हरियाणा में 10 फरवरी को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् 410 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बिलासपुर,** हिमाचल प्रदेश में 15 से 17 फरवरी को खुला सत्संग लगा उसमें 58 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **श्रीरामशरणम्,** रामतार्थ के तृतीय स्थापना दिवस 22 फरवरी के उपलक्ष्य में तेरह दिवसीय अखण्ड जप 23 फरवरी शनिवार को प्रातः 6-7 बजे पूरे भाव चाव और आनन्द के साथ, निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। इसका शुभारंभ 10 फरवरी बसंन्त पंचमी को प्रातः 5 बजे हुआ था। नियमित सत्संग के अतिरिक्त 22 फरवरी को विशेष कार्यक्रमों की श्रृंखला में श्री सुन्दरकांड पाठ, प्रवचन, लघु ग्रन्थों का पाठ स्वाध्याय एवं श्री अमृतवाणी जी के सैंकड़ों मानसिक पाठ, रात्रि को विशेष अमृतवाणी सत्संग के साथ सम्पन्न हुआ।

6 हजार 508 भक्तों ने ली राम नाम की दीक्षा, आंकड़ा 29 हजार के पार

झावुआ स्थित श्रीरामशरणम भवन पर रविवार को राम नाम की दीक्षा के लिए उमड़ी भक्तों की भीड़।

तीन दिवसीय सत्संग कार्यक्रम का कल होगा समापन

झाबुआ। नईदुनिया प्रतिनिधि

राम नाम की महिमा का विस्तार कर रहा श्रीरामशरणम का परिवार अब 2 लाख 63 हजार का हो चुका है। रविवार को जब झाबुआ के प्रमुख श्रीरामशरणम सत्संग भवन में दीक्षा कार्यक्रम हुआ तो 6 हजार 508 लोगों ने राम नाम की दीक्षा ले ली। 16 दिसंबर से लगातार दीक्षा कार्यक्रम संपूर्ण क्षेत्र में चल रहे थे। सात आयोजनों के बाद अंत में रविवार को झाबुआ में दीक्षा कार्यक्रम हुआ। लगभग एक माह में इन आयोजनों के माध्यम से 29 हजार 95 दीक्षा हो चुकी है। रविवार को आरंभ हुआ खुला सत्संग मंगलवार तक झाबुआ में जारी रहेगा।

रविवार को श्रीरामशरणम समिति ने शुरुआत में साप्ताहिक सत्संग किया। फिर 11 बजे से नाम दीक्षा कार्यक्रम आरंभ हो गया। महाराज जी की वीसीडी के माध्यम से दीक्षा करवाई गई। इसके बाद दोपहर 3 बजे खुले सत्संग का आरंभ हुआ। जो देर शाम तक चलता रहा। शाम को रामायण पाठ व प्रवचन हुए।

सोमवार को सुबह 7-8 बजे तक भजन कीर्तन हुए। उसके बाद गीता पाठ प्रवचन का आयोजन हुआ। दोपहर में मौन कार्यक्रम हुआ। 3-4 बजे तक अमृत वाणी व उसके बाद रामायण पाठ का आयोजन होगा। मंगलवार को भजन-कीर्तन, गीता पाठ व अमृत वाणी का आयोजन होगा।

उमड़े भक्त: रविवार को झाबुआ श्रीरामशरणम भवन में दीक्षा लेने के लि भक्तों की भीड़ उमडी। वहां पर 6 हज 508 दीक्षार्थियों ने राम नाम की दी ग्रहण की। यहां पर लगे स्टालों से लो ने धार्मिक किताबें भी खरीदी। 16 दिसं से अब तक 29 हजार 95 श्रद्धालुओं राम नाम की दीक्षा ली। 16 दिसंबर व दाहोद, 17 दिसंबर को पेटलावद, 1 दिसंबर को सेमरोड, 19 दिसंबर व कल्याणपुरा, 20 दिसंबर को कुशलग 11 जनवरी को कुपडा, 12 जनवरी व सातसेरा में राम नाम दीक्षा का आयोज किया गया।

स्टालो पर धार्मिक पुस्तकें खरीदने वालों की भी भीड़ देखी गई।

झाबुआ, मध्य प्रदेश में 13 से 15 जनवरी को खुला सत्संग लगा, जिसमें 13 जनवरी को 6508 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। दिसंबर 2018 और जनवरी 2019 में झाबुआ श्रीरामशरणम् के अंतर्गत उपकेंद्रों में 29,615 दीक्षा हुई।

- **दिल्ली श्रीरामशरणम्** में दिसम्बर, जनवरी एवं फरवरी में साप्ताहिक कार्यक्रम के पश्चात् 94 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

- **हरिद्वार** में 13 से 16 मार्च तक परम पूजनीय महाराज जी के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा।
- **दिल्ली श्रीरामशरणम्** में 20 से 22 मार्च तक होली सत्संग का आयोजन हो रहा है।
- **नरोट मेहरा,** पंजाब में 26 मार्च को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् दीक्षा ग्रहण का आयोजन हो रहा है।
- **गांधीधाम,** गुजरात में 31 मार्च को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् दीक्षा ग्रहण का आयोजन हो रहा है।
- **इचलकरंजी,** महाराष्ट्र में 31 मार्च को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के पश्चात् दीक्षा ग्रहण का आयोजन हो रहा है।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **अमरपाटन,** मध्यप्रदेश में श्रीरामशरणम् भवन का निर्माण कार्य चल रहा है।
- **धारीवाल,** पंजाब में श्रीरामशरणम् भवन का निर्माण कार्य चल रहा है।

दस लक्षण का धर्म जो पाले, वीर धीर हो कर्म निभा ले।
कर्मयोगी ज्ञानी संन्यासी, है वही सुख धाम का वासी।।

चार वर्ण का धर्म समाना, मानव धर्म सभी ने माना।
है यह सार धर्म का सारा, जान शेष मत वाद पसारा।।

(भक्ति प्रकाश, 28, 29, पृ 215)

INVITATION TO ALL CHILDREN

All children of Shree Ram Sharnam are invited to make cards for Guru Purnima and submit to Satya Sahitya by 31st May 2019. The best cards will be published in the July edition of Satya Sahitya.

Please note the following:

1. Please make your card on one page only.
2. Please do not write your name on the card since names will not be published.
3. Please write your name and address at the back of the card.
4. Please note that cards will not be returned.
5. All entries will be reviewed.
6. If sending by Whatsapp, please take a picture of your card in proper lighting so that the picture quality is good.

Please either Whatsapp your card on +91-8360781858 or post it physically to Shree Ram Sharnam, 8A, Ring Road, Lajpat Nagar - IV, New Delhi- 110024, India, inscribing at the top 'Card Only'.

We look forward to receiving your cards.

Sadhna Satsang (April to September 2019)		
Haridwar	15 to 20 April	Monday to Saturday
Haridwar	30 June to 3 July	Sunday to Wednesday
Haridwar (Guru Purnima)	11 to 16 July	Thursday to Tuesday
Haridwar (Ramayani)	29 Sept. to 8 October	Sunday to Tuesday

Open Satsang (April to September 2019)		
Jhabua (Maun Sadhana)	5 to 14 April	Friday to Sunday
Bhareri	14-Apr	Sunday
Mandi, HP	21-Apr	Sunday
Kandaghat, HP	12-May	Sunday
Manali	14 to 16 June	Friday to Sunday
Saylorsburg, USA	27 to 30 June	Thursday to Sunday
Delhi	27 to 29 July	Saturday to Monday
Rohtak	10 to 11 August	Saturday & Sunday
Hiranagar	18-Aug	Sunday
Ratangarh	31 August - 1 Sept.	Saturday to Sunday
Rewari	7 to 8 September	Saturday & Sunday
Hisar	14 - 15 September	Saturday to Sunday
Gurdaspur	20 - 22 September	Friday to Sunday
Sydney	28 to 29 September	Saturday & Sunday

Purnima (April to September 2019)	
19 April	Friday
18 May	Saturday
17 June	Monday
16 July	Tuesday
15 August	Thursday
14 September	Saturday

Deeksha in Shree Ram Sharnam Delhi (April to September 2019)		
21 April	Sunday	10.30 AM
26 May	Sunday	10.30 AM
16 July	Tuesday	4.00 PM
25 August	Sunday	10.30 AM
22 September	Sunday	10.30 AM

Naam Deeksha in Other Centres (April to September 2019)		
31-Mar	Sunday	Gandhidham, Gujarat
31-Mar	Sunday	Ichalkranji, Maharastra
13-Apr	Saturday	Rupdiya, Nepal
14-Apr	Sunday	Jawali, HP
14-Apr	Sunday	Bhareri, HP
21-Apr	Sunday	Mandi, HP
21-Apr	Sunday	Lambasa, Fiji
21-Apr	Sunday	Mani, Fiji
28-Apr	Sunday	Suva, Fiji
05-May	Sunday	Batala, Punjab
12-May	Sunday	Kandaghat, HP
16-Jun	Sunday	Manali, HP
23-Jun	Sunday	Ramgarh, Chandouli, UP
27-Jun	Thursday	Saylorsburg, USA
30-Jun	Sunday	Saylorsburg, USA
11-Aug	Sunday	Rohtak, Haryana
18-Aug	Sunday	Hiranagar, J&K
01-Sep	Sunday	Rattangarh, Rajasthan
08-Sep	Sunday	Jalandhar, Punjab
08-Sep	Sunday	Rewari, Haryana
15-Sep	Sunday	Hisar, Haryana
22-Sep	Sunday	Gurdaspur, Punjab
29-Sep	Sunday	Sydney, Australia

Observant Mind : Activities

Becoming aware of how one feels is an important part of increasing self awareness. Our emotions guide our actions to a large extent. Before learning to master our emotions, it is important to recognise and accept them. Knowing ones emotions and what brings them out is a great skill. It is an important step in learning self control.

Here are two short activities which will help you reflect on your emotions. Think about the time when you felt these emotions and why?

Complete the below sentences:

Activity 1

I feel irritated when
I feel calm when
I feel confused when
I feel excited when
I feel nervous when

Activity 2:

Write the first thing that comes to your mind:
I am
I like
I can
I enjoy
I believe

Raja Shibi

(A Story from the Mahabharat)

Once upon a time there was a king named Shibi who was famous for his honesty and was known as a true follower of Dharma.

Indra, the king of Heaven, once decided to test Raja Shibi. In order to do so, Indra took the form of a large falcon and started to follow a dove as though he wanted to kill it. The terrified dove flew towards the palace of Shibi who happened to be sitting alone on the terrace. The dove sat on the lap of the king and appealed to him for help. The kind King promised to save the dove. Soon the falcon too came to the royal palace. He appealed to King Shibi to return the dove. He told the King that the dove was his food which the King had no right to take from him. King Shibi thought hard about what the falcon had said. He was in a quandary since he had already promised the dove that he would save him. Yet, he could also not deny the falcon his meal. After much discussion between the king and the falcon, the falcon agreed that he would not kill the dove on the condition that the king would give him as much flesh from his own body as he would have got from the dove. King Shibi happily agreed. The king cut off a portion of his thigh and weighed it against the weight of the dove. Now something strange started to happen. The dove started getting heavier and heavier. As the King placed more and more of his flesh against the weight of the falcon, it was just not enough. Soon King Shibi had offered almost his whole body and yet the dove was heavier.

Finally, King Indra gave up the form of the falcon and appeared in his true form. He was very pleased with Shibi for fulfilling the true duty of a king. Shibi is still remembered for following his dharma and for leading a righteous life. ■

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, ए–27, नारायणा औद्यौगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित। संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, A-27, Naraina Industrial Area, Phase 2, New Delhi 110028. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924